पुoना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –IX

HINDI

APRIL MONTH

SYLLABUS

2020

<u>Chapters:-</u>

Chp-1-Dhool

Chp-9-Raidaas-Dohe

Chp-2-Dukh ka Adhikaar

Chp-10-Rahim ke dohe

Chp-1-Gillu(Sanchayan)

गद्य-भाग

पाठ -1

(धूल)

*-पाठ 'धूल' के लेखक श्री रामविलास शर्मा है|

*-लेखक का परिचय:-आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ॰ **रामविलास शर्मा** ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं, जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं।उनकीआलोचना प्रक्रिया में केवल साहित्य ही नहीं होता, बल्कि वे समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं।

पाठ का सार:-

'धूल' पाठ में लेखक रामविलास शर्मा ने धूल के महत्व का वर्णन किया है। लेखक स्वयं गाँव से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। आज के लोगों द्वारा धूल की अनदेखी उन्हें अच्छी नहीं लगती है। उनके अनुसार गाँव में, पहलवानों के अखाड़े में, किसानों के लिए और बच्चों के लिए गोधूलि बहुत महत्वपूर्ण है। परन्तु विडंबना देखिए कि शहरों में लोग इस धूल को गंदगी मान कर इससे बचने का प्रयास करते हैं। लेखक को यह बात बुरी लगती है। इसलिए इस पाठ में लेखक ने धूल के महत्व, उसकी विशेषता और भारत के गाँवों में धूल की महिमा का वर्णन किया है। उन्होंने अलग-अलग उदाहरणों द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि धूल कितनी अमूल्य धरोहर है, हम भारतीयों के लिए। उन्होंने पूरे पाठ में हमारे जीवन में धूल की उपस्थिति का वर्णन किया है।

***-मिटटी और धूल का अर्थ:-**प्रस्तुत पाठ में मिटटी के गुणों को प्रस्तुत किया गया है| अखाड़ा प्रमी को अखाड़े की मिटटी देवताओ पैर चड़नेवाली पवित्र मिटटी प्रतीत होती है|

धूल का भौतिक,रासायनिक तत्व के साथ साथ सांस्कृतिक विरासत का प्रीतिक भी है| यह धूल साधारण धूल नहीं है|

इसकी मिटटी में हमारी सभ्यता पनपी है| यह भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है| यह मिटटी ही इसकी पहचान करती है

पृथ्वी का महत्वपूण तत्व है मिटटी| मिटटी की आभा धूल से है| मिटटी के रंग रूप की पहचान धूल से है|

पूरी प्रकृति व् स्रष्टि का जन्म धूल और मिटटी से हुआ है|

मिटटी में यदि गुण न हो तो क्या किसान इसे अपनी माँ मानता ,इससे दिनरात खेती कर सबका भरण पोषण कटा?

एक सैनिक इस मिटटी का तिलक लगा कर अपनी जान इस मिटटी के लिय नयोछावर करता?

एक पहलवान क्या अखाड़े की मिटटी को अपनी माँ का आंचल समझ कर मिटटी को अपने शारीर पर लपेट कर दुश्मन को धूल चटाता?

धूल और मिटटी में व्ही सम्बन्ध है जो देह और प्राण में होता है| जो शब्द और रस में होता है|

*-धूल और गोधुलि :-

-धूल एक अल्हड बच्चे की तरह हर जगह ओद्ती रहती है|

-गिधूली वः ओद्ती हई धूल है जो गाय के खुर से ओद्ती है| जब शाम को गाँव के पशु चार के गाँव को लौटते है, तब धूल उनके पैरो से उडती हुई दूर से नजर आती है| यह धूल गाँव की सम्पन्नता का प्रतिक है|

-लेखक ने दूसरा पक्ष यह रखा है कि जब यही धूल किसी के माथे पर लगती है तो मन में देश भक्ति की भावना जगती है |

-यही धूल और मिटटी से श्रद्धा, प्रेम, आदर और स्नेह का भाव जब चरम पर पहुँचती है तब हम आदरपूर्वक अपनों के बडो के और गुरुजनों के चरण छु कर आशीर्वाद लेते है

-यही धूल जब इक्सी मासूम बच्चे के मुखड़े पर लगती है,तब उसका मुख का सौदर्य और भी निखर जाता है

-उसे किसी नकली साज सज्जा के साधनों की जरुरत नही होती |

*-लेखक इस बात से दुखी है कि आज की पढ़ी लिखी सभ्यता एक सुख से वंचित रह गी है| आज की सभी जनता धूल व् मिटटी की उपेक्षा करते है| आज के आधुनिक लोग इस मिटटी धूल को प्रदुषण मानते है|

*-आज के बच्चे धूल ,मिटटी जैसी इस प्रकृतिक चीज से अपने को दूर रखते है|

-लेखक कहते है कि जो बचपन मिटटी में नही बिता वः बचपन ही क्या,यह दुर्भाग्य है|

-हम चमकते हीरे की खरीदारी खूब उची कीमत से करने की इच्छा रखते है,परन्तु हम सब भूल जाते है किचमकता हुआ हीरा मिटटी में दबे कोयलों से ही बनता है ,इज्स मिटटी को हम हाथ तक लगाना पसंद नहीं करते है| यदि सभी ऐसा सोचने लग जाए तो क्या होता जब किसान खेतो में. न जाता ,कहां से हम सब का पेट भरता सभी लोगो का भरण-पोषण कैसे होता| यदि कुम्हार भी मिटटी को हाथ न

लगाता तो सुन्दर कलाक्रति ,शिल्पकारी,मिटटी के सुंदर बर्तन हमे देखने को नही मिलते | क्या हमारी सभ्यता पहचान पा सकती थी|

Þ-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. हीरे के प्रेमी उसे किस रुप में पसंद करते हैं?

उत्तर:- हीरे के प्रेमी उसे साफ़ सुथरा खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ पसंद करते हैं।

2. लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?

उत्तर:- लेखक ने संसार में अखाड़े की मिट्टी में लेटने, मलने के सुख को दुर्लभ माना है। यह मिट्टी तेल और मट्ठे से सिझाई जाती है और पवित्र होती है। इसे देवता के सिर पर भी चढ़ाया जाता है। ऐसी इस अखाड़े की मिट्टी को अपनी देह पर लगाना संसार के सबसे दुर्लभ सुख के समान है।

3. मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

उत्तर:- मिट्टी की आभा का नाम 'धूल' है, उसकी पहचान धूल से ही होती है।

4. धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर:- धूल का जीवन में बहुत महत्व है। माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। विशेषकर शिशु के लिए। माँ की गोद से उतरकर बच्चा मातृभूमि पर कदम रखता है। घुटनों के बल चलना सीखता तब मातृभूमि की गोद में धूल से सनकर निखर उड़ता है। यह धूल जब शिशु के मुख पर पड़ती है तो उसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। धूल में लिपटे रहने पर ही शिशु की सुंदरता बढ़ती है। तभी वे धूल भरे हीरे कहलाते हैं। धूल के बिना शिशु की कल्पना ही नहीं की जा सकती। धूल उनका सौंदर्य प्रसाधन है।

5. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?

उत्तर:- हमारी सभ्यता धूल से बचना चाहती है क्योंकि वह आसमान को छूने की इच्छा रखती है। धूल के प्रति उनमें हीन भावना है। धूल को सुंदरता के लिए खतरा माना गया है। इस धूल से बचने के लिए ऊँचे-ऊँचे आसमान में घर बनाना चाहते हैं जिससे धूल से उनके बच्चे बचें। वे बनावट-श्रृंगार को महत्त्व देते हैं। वे कल्पना में विचरते रहना चाहते हैं, वास्तविकता से दूर रहते हैं।

6. लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?

उत्तर:- लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर लगी धूल को श्रेष्ठ इसलिए मानता है क्योंकि इससे उनका सौंदर्य और भी निखर आता है। यह शिशु की सहज पार्थिवता को निखारती है। यह धूल उनके सौंदर्य को और भी बढ़ा देती है। बनावटी प्रसाधन भी वह सुंदरता नहीं दे पाते।

7. लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?

उत्तर:- लेखक धूल और मिट्टी का अंतर शरीर और आत्मा के समान मानता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में देह और प्राण, चाँद और चाँदनी के समान का अंतर है। मिट्टी की आभा धूल है तो मिट्टी की पहचान भी धूल है। मिट्टी में जब चमक उत्पन्न होती है तो वह धूल का पवित्र रूप ले लेती है।

8. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?

उत्तर:- ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए है –

• अमराइयों के पीछे छिपे सूर्य की किरणें धूल पर पड़ती है तब ऐसा प्रतीत होता है मानो आकाश पर सोने की परत छा गई हो।

• सांयकाल गोधूलि के उड़ने की सुंदरता का चित्र ग्रामीण परिवेश में प्रस्तुत करती है जो कि शहरों के हिस्से नहीं पड़ती।

• शिशु के मुख पर धूल फूल की पंखुड़ियों के समान सुंदर लगती है। उसकी सुंदरता को निखारती है।

• पशुओं के खुरों से उड़ती धूल तथा गाड़ियों के निकलने से उड़ती धूल रुई के बादलों के समान लगती है।

• अखाड़े में सिझाई हुई धूल का अपना प्रभाव है।

9. 'हीरा वही घन चोट न टूटे' – का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- "हीरा वही घन चोट न टूटे"- का अर्थ है असली हीरा वही है जो हथौड़े की चोट से भी न टूटे और अटूट होने का प्रमाण दे। हीरा हथौड़े की चोट से भी नहीं टूटता परन्तु काँच एक ही चोट में टूट जाता है। हीरे और काँच की चमक में भी अंतर है। परीक्षण से यह बात सिद्ध हो जाती है। इसी तरह ग्रामीण लोग हीरे के समान होते हैं- मजबूत सुदृढ़। अर्थात देश पर मर मिटने वाले हीरे अपनी अमरता का प्रमाण देते हैं। वह कठिनाइयों से कभी नहीं घबराते।

10. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि का रंग एक ही है चाहे रुप अलग है। धूल यथार्थवादी गद्य है तो धूलि उसकी कविता। धूली छायावादी दर्शन है और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। 'गोधूलि' गायों एवं ग्वालों के पैरों से उड़ने वाली धूलि है। इन सब का रंग एक ही है परंतु गोधूलि गाँव के जीवन की अपनी संपत्ति है।

11. 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक ने पाठ "धूल" में धूल का महत्त्व स्पष्ट किया है। लेखक आज की संस्कृति की आलोचना करते हुए कहता है कि शहरी लोग धूल की महत्ता को नहीं समझते, उससे बचने की कोशिश करते हैं। जिस धूल मिट्टी से हमारा शरीर बना है, हम उसी से दूर रहना चाहते हैं। परंतु आज का नगरीय जीवन इससे दूर रहना चाहता है जबकि ग्रामीण सभ्यता का वास्तविक सौंदर्य ही "धूल" है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

1. फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।

उत्तर:- इस कथन का आशय यह है कि फूल के ऊपर अगर थोड़ी सी धूल आ जाती है तो ऐसा लगता है मानों फूल की सुंदरता में और भी निखार आ गया है। उसी प्रकार शिशु के मुख पर धूल उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देती है। ऐसा सौंदर्य जो कृत्रिम सौंदर्य सामग्री को बेकार कर देता है। अत: धूल कोई व्यर्थ की वस्तु नहीं है।

2. 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की' – लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर:- इस पंक्ति का आशय यह है कि वे व्यक्ति धन्य हैं जो धूरि भरे शिशुओं को गोद में उठाकर गले से लगा लेते हैं और उन पर लगी धूल का स्पर्श करते हैं। बच्चों के साथ उनका शरीर भी धूल से सन जाता है। लेखक को 'मैले' शब्द में हीनता का बोध होता है क्योंकि वह धूल को मैल नहीं मानते। 'ऐसे लरिकान' में भेदबुद्धी नज़र आती है। अत: इन पंक्तियों द्वारा लेखक धूल को पवित्र और प्राकृतिक श्रृंगार का साधन मानते हैं।

3. मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।

उत्तर:- लेखक मिट्टी और धूल में अंतर बताता है परन्तु इतना ही कि वह एक दूसरे के पूरक हैं। मिट्टी की चमक का नाम धूल है। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। जिस प्रकार शब्द से रस, देह से प्राण, चाँद से चाँदनी अलग कर देने पर नष्ट हो सकती है,उसी प्रकार मिट्टी के धूल से अलग हो जाने पर वह नष्ट हो जाएगी।

4. हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।

उत्तर:- आज के युग में देशभक्ति की भावना का रूप ही बदल गया है। लेखक देशभक्ति की बात कहकर यह कहना चाहता है कि वीर योद्धा अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं,धूल मस्तक पर लगाते हैं, किसान धूल में ही सन कर काम करता है, अपनी मिट्टी से प्यार, श्रद्धा रखता है। उसी तरह हमें भी धूल से बचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अगर माथे से नहीं लगा सकते तो कम से कम पैरों से तो उसे स्पर्श करें। उसकी वास्तविकता से परिचित हो।

5. वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

उत्तर:- हीरा बहुत मजबूत होता है। इसलिए हीरा ग्रामीण सभ्यता का प्रतीक है। काँच शहरी सभ्यता का प्रतीक है। हीरा हथौड़े की चोट से भी नहीं टूटता परन्तु काँच एक ही चोट में टूट जाता है। हीरे और काँच की चमक में भी अंतर है। परीक्षण से यह बात सिद्ध हो जाती है। इसी तरह ग्रामीण लोग हीरे के समान होते हैं – मजबूत सुदृढ़। समय का हथौड़ा इस सच्चाई को सामने लाता है। अर्थात देश पर मर मिटने वाले हीरे अपनी अमरता का प्रमाण देते हैं।

गध-भाग

पाठ-2

(दुःख का अधिकार)

लेखक का परिचय:-यशपालजी का जन्म फिरोजपुर छावनी में १९०३ में. हुआ था |यशपालजी यह मानते है किसमाज को उन्नत या आच्चा बनाने के लिय एक ही रास्ता है सामाजिक समानता के साथ साथ आर्थिक समानता | प्रस्तुत खानी में देश में फैले अंधविश्वास और ऊंच नीच के भेद भाव को बताते है| वह कहते है कि दुःख की अनुभूति सभी को एह समान होती है | यह खानी धनि लोगो की अमानवीयता और गरीबो की दयनीय दशा को उजारार करती है| यह सही है कि इंसान पैर जब दुःख पड़ता है तो वः टूट जाता है| इंसान उस दुःख का मातम मनाना चाहता है| हमारे देश गरीबो को दुःख मनाने या जताने का भी अधिकार नही है और दुःख मनाने की फुर्सत भी नही है|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर:- किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा और अधिकार का पता चलता है तथा उसकी अमीरी-गरीबी श्रेणी का पता चलता है।

2. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर:- उसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग उससे खरबूजे नहीं खरीद रहे थे।

3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर:- उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी।

4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर:- उस स्त्री का लड़का एक दिन मुँह-अंधेरे खेत में से बेलों से तरबूजे चुन रहा था की गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फूँक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

उत्तर:- बुढिया का बेटा मर गया था इसलिए बुढ़िया को दिए उधार को लौटने की कोई संभावना नहीं थी। इस वजह से बुढ़िया को कोई उधार नहीं देता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

6. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर:- मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाकें ही व्यक्ति का समाज में अधिकार व दर्जा निश्चित करती हैं। पोशाकें व्यक्ति को ऊँच-नीच की श्रेणी में बाँट देती है। कई बार अच्छी पोशाकें व्यक्ति के भाग्य के बंद दरवाज़े खोल देती हैं। सम्मान दिलाती हैं।

7. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर:- जब हमारे सामने कभी ऐसी परिस्थिति आती है कि हमें किसी दुखी व्यक्ति के साथ सहानुभूति प्रकट करनी होती है, परन्तु उसे छोटा समझकर उससे बात करने में संकोच करते हैं।उसके साथ सहानुभूति तक प्रकट नहीं कर पाते हैं। हमारी पोशाक उसके समीप जाने में तब बंधन और अड़चन बन जाती है।

8. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर:- वह स्त्री घुटनों में सिर गड़ाए फफक-फफककर रो रही थी। इसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग इससे खरबूजे नहीं ले रहे थे। उसे बुरा-भला कह रहे थे। उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी। परंतु लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि उसकी पोशाक रुकावट बन गई थी।

9. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर:- भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में खरबूज़ों को बोकर परिवार का निर्वाह करता था। खरबूज़ों की डलियाँ बाज़ार में पहुँचाकर लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता था।

10. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर:- बुढ़िया बेटे की मृत्यु का शोक तो प्रकट करना चाहती है परंतु उसके घर की परिस्थिति उसे ऐसा करने नहीं दे रही थी। इसका सबसे बड़ा कारण है, धन का अभाव। उसके बेटे भगवाना के बच्चे भूख के मारे बिलबिला रहे थे। बहू बीमार थी। यदि उसके पास पैसे होते, तो वह कभी भी सूतक में सौदा बेचने बाज़ार नहीं जाती।

11. बुढ़िया के दु:ख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर:- लेखक के पड़ोस में एक संभ्रांत महिला रहती थी। उसके पुत्र की भी मृत्यु हो गई थी और बुढ़िया के पुत्र की भी मृत्यु हो गई थी परन्तु दोनों के शोक मनाने का ढंग अलग-अलग था। धन के अभाव में बेटे की मृत्यु के अगले दिन ही वृद्धा को बाज़ार में खरबूज़े बेचने आना पड़ता है। वह घर बैठ कर रो नहीं सकती थी। मानों उसे इस दुख को मनाने का अधिकार ही न था। आस-पास के लोग उसकी मजबूरी को अनदेखा करते हुए, उस वृद्धा को बहुत भला-बुरा बोलते हैं। जबकि संभ्रांत महिला को असीमित समय था। अढ़ाई मास से पलंग पर थी, डॉक्टर सिरहाने बैठा रहता था। लेखक दोनों की तुलना करना चाहता था इसलिए उसे संभ्रांत महिला की याद आई।

12. बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- धन के अभाव में बेटे की मृत्यु के अगले दिन ही वृद्धा को बाज़ार में खरबूज़े बेचने आना पड़ता है। बाज़ार के लोग उसकी मजबूरी को अनदेखा करते हुए, उस वृद्धा को बहुत भला-बुरा बोलते हैं। कोई घृणा से थूककर बेहया कह रहा था, कोई उसकी नीयत को दोष दे रहा था, कोई रोटी के टुकड़े पर जान देने वाली कहता, कोई कहता इसके लिए रिश्तों का कोई मतलब नहीं है, परचून वाला कहता, यह धर्म ईमान बिगाड़कर अंधेर मचा रही है, इसका खरबूज़े बेचना सामाजिक अपराध है। इन दिनों कोई भी उसका सामान छूना नहीं चाहता था।

13. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर:- पास-पड़ोस की दुकानों में पूछने पर लेखक को पता चला की। उसका २३ साल का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर जमीन में कछियारी करके निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। परसों मुँह-अंधेरे खेत में से बेलों से तरबूजे चुन रहा था कि गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फूँक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

14. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर:- प्रस्तुत कहानी समाज में फैले अंधविश्वासों और अमीर-गरीबी के भेदभाव को उजागर करती है। यह कहानी अमीरों के अमानवीय व्यवहार और गरीबों की विवशता को दर्शाती है। मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्राय: पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास पारिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

---

15. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर:- समाज में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति को नियमों, कानूनों व परंपराओं का पालन करना पड़ता है। दैनिक आवश्यकताओं से अधिक महत्व जीवन मूल्यों को दिया जाता है।यह वाक्य गरीबों पर एक बड़ा व्यंग्य है। गरीबों को अपनी भूख के लिए पैसा कमाने रोज़ ही जाना पड़ता है चाहे घर में मृत्यु ही क्यों न हो गई हो। परन्तु कहने वाले उनसे सहानुभूति न रखकर यह कहते हैं कि रोटी ही इनका ईमान है, रिश्ते-नाते इनके लिए कुछ भी नहीं है।

---

16. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर:- यह व्यंग्य अमीरी पर है क्योंकि समाज में अमीर लोगों के पास दुख मनाने का समय और सुविधा दोनों होती हैं। इसके लिए वह दु:ख मनाने का दिखावा भी कर पाता है और उसे अपना अधिकार समझता है। शोक करने, गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए। दु:ख में मातम सभी मनाना चाहते हैं चाहे वह अमीर हो या गरीब। परंतु गरीब विवश होता है। वह रोज़ी रोटी कमाने की उलझन में ही लगा रहता है। उसके पास दु:ख मनाने का न तो समय होता है और न ही सुविधा होती है। इस प्रकार गरीबों को रोटी की चिंता उसे दु:ख मनाने के अधिकार से भी वंचित कर देती है।

पद्य-भाग

पाठ-9

(अब कैसे छूटेराम नाम)

***-संत रैदास का परिचय:-**

-रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 (इनका जन्म कुछ विद्वान 1398 में हुआ भी बताते हैं) को बनारस में एक चर्मकार के घर हुआ था| रैदास कबीर के समकालीन हैं। रैदास की ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था।

Þ-wava4R

1 अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

इस पद में कवि ने उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है। एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो वह फिर कभी नहीं छूटता। कवि का कहना है कि यदि भगवान चंदन हैं तो भक्त पानी है। जैसे चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है वैसे ही प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि भगवान बादल हैं तो भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो अपलक चाँद को निहारता

रहता है। यदि भगवान दीपक हैं तो भक्त उसकी बाती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। यदि भगवान मोती हैं तो भक्त धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

2- ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। भगवान गरीबों का उद्धार करने वाले हैं उनके माथे पर छत्र शोभा दे रहा है। भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। भगवान के छूने से अछूत मनुष्य का भी कल्याण हो जाता है। भगवान अपने प्रताप से किसी नीच को भी ऊँचा बना सकते हैं। जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे।

***-प्रश्न-उत्तर:-**

1: पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर: बादल-मोर, चाँद-चकोर, मोती-धागा, दीपक-बाती और सोना-सुहागा

2: पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे: पानी, समानी, आदि। इस पद में अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर: मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा

3: पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए: उदाहरण: दीपक – बाती

उत्तर: चंदन-पानी, घन-बनमोरा, चंद-चकोरा, सोनहि-सुहागा

4: दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दूसरे पद में भगवान को 'गरीब निवाजु' कहा गया है क्योंकि भगवान गरीबों का उद्धार करते हैं।

5: दूसरे पद की 'जाकी छोती जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जिसकी छूत पूरी दुनिया को लगती है उसपर भगवान ही द्रवित हो जाते हैं। अछूत से अभी भी बहुत से लोग बच कर चलते हैं और अपना धर्म भ्रष्ट हो जाने से डरते हैं। अछूत की स्थिति समाज में दयनीय है। ऐसे लोगों का उद्धार भगवान ही करते हैं।

6: रैदास ने अपने स्वामी को किन किन नामों से पुकारा है?

उत्तर: गुसईआ (गोसाई), गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाले)

7: निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए: मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, छोति, तुहीं, गुसईआ।

उत्तर: मोर, चाँद, बत्ती, ज्योति, जलना, रात, छाता, छूने, तुम्हीं, गोसाई|

Ú: kiv kerom rom mepßwukl wiKt kl sg2 iks pßkar sma{ hu{ hE?

]Ttr: ijs pßkar panl kek`-k` mecdn kl sg2 sma{ rhtl hE,]sl pßkar kiv kerom-rom mepßwukl wiKt sma{ hE|

Û: kiv {Xvr keblc kSa sb2 S4aipt krna cahtehE?

]Ttr: kiv ApneA0r {Xvr keblc AnNy sb2 S4aipt krna cahtehE|

ÓÒ: rEas kelal ,A4aR pßwukl ivx8ta iliq0|

]Ttr: rEas nelal,A4aR pßwukl ivx8taA0. Ka bqan krteh0 kha hEik mee lal dlndyal,grlb invaju,A0r smdxlRhE|

ÓÓ:-rEas ne{Xvr ko grlb invajuKyo. kha hE?

]Ttr:- rEas ne{Xvr ko grlb invajukha hEKyoik vh duqyo.pr kpa krke]nkeduq dU krtehE|

ÓÔ: pßwuneikn ikn logo. ka]d2ar ikya hE?

]Tt: pßwunenamdev,kblr,i5locn,s2na A0r sEujSek{ wKto. Ka]d2ar ikya hE|

***-नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:**

1: जाकी अँग-अँग बास समानी।

उत्तर: भगवान उस चंदन के समान हैं जिसकी सुगंध अंग-अंग में समा जाए।

2: जैसे चितवन चंद चकोरा।

उत्तर: जैसे चकोर हमेशा चांद को देखता रहता है वैसे ही मैं भी तुम्हें देखते रहना चाहता हूँ।

3: जाकी जोति बरै दिन राती।

उत्तर: भगवान यदि एक दीपक हैं तो भक्त उस बाती की तरह है जो प्रकाश देने के लिए दिन रात जलती रहती है।

4: ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

उत्तर: भगवान इतने महान हैं कि वह कुछ भी कर सकते हैं। भगवान के बिना कोई भी व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता।

5: नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।

उत्तर: भगवान यदि चाहें तो निचली जाति में जन्म लेने वाले व्यक्ति को भी ऊँची श्रेणी दे सकते हैं।

Þ-inMn mewgvan A0r wKt kI tulna kI g{ hE

wgvan	wKt kI tulna
cdn se	panI se
cad se	ck0r se
badl se	m0r se
dIpk se	batI se
m0tI se	2agese
SvamI se	das se
sbagese	s0nese

p´-wag

पाठ-10

(रहीम के दोहे-)

*-रहीम का परिचय :-

अब्दुल **रहीम** ख़ानख़ाना का जन्म 17 दिसम्बर, 1556 ई. (माघ, कृष्ण पक्ष, गुरुवार) को सम्राट अकबर के प्रसिद्ध अभिभावक बैरम ख़ाँ के यहाँ लाहौर में हुआ था. ... बाबर की सेना में भर्ती होकर **रहीम** के पिता बैरम ख़ाँ ने अपनी स्वामी-भक्ति और वीरता का **परिचय** दिया और बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ के विश्वासपात्र बन गए| जन्म से एक मुसलमान होते हुए भी हिंदू जीवन के अंतर्मन में बैठकर रहीम जी ने जिस माध्यम से अंकित किये थे, उनकी विशाल हृदयता का परिचय देती हैं। हिंदू देवी-देवताओं, पर्वों, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का जहाँ भी आपके द्वारा उल्लेख किया गया है, पूरी जानकारी एवं ईमानदारी के साथ किया गया है। आप जीवन भर हिंदू जीवन को भारतीय जीवन का यथार्थ मानते रहे। रहीम ने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को उदाहरण के लिए चुना है और लौकिक जीवन व्यवहार पक्ष को उसके द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है, जो भारतीय सांस्कृति की वर झलक को पेश करता है।

उनके काव्य में शृंगार, शांत तथा हास्य रस मिलते हैं। दोहा, सोरठा, बरवै, कवित्त और सवैया उनके प्रिय छंद हैं। रहीम दास जी की भाषा अत्यंत सरल है, आपके काव्य में भक्ति, नीति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। आपने सोरठा एवं छंदों का प्रयोग करते हुए अपनी काव्य रचनाओं को किया है| आपने ब्रजभाषा में अपनी काव्य रचनाएं की है| आपके ब्रज का रूप अत्यंत व्यवहारिक, स्पष्ट एवं सरल है| आपने तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। ब्रज भाषा के अतिरिक्त आपने कई अन्य भाषाओं का प्रयोग अपनी काव्य रचनाओं में किया है| अवधी के ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी रहीम जी ने अपनी रचनाओं में

किया है, आपकी अधिकतर काव्य रचनाएं मुक्तक शैली में की गई हैं जोकि अत्यंत ही सरल एवं बोधगम्य

रहीम के दोहे-

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम के इन दोहों में रहीम जी ने हमें प्रेम की नाज़ुकता के बारे में बताया है। उनके अनुसार प्रेम का बंधन किसी नाज़ुक धागे की तरह होता है और इसे बहुत संभाल कर रखना चाहिए। हम बलपूर्वक किसी को प्रेम के बंधन में नहीं बाँध सकते। ज्यादा खिंचाव आने पर प्रेम रूपी धागा चटक कर टूट सकता है। प्रेम रूपी धागे यानि टूटे रिश्ते को फिर से जोड़ना बेहद मुश्किल होता है। अगर हम कोशिशें करके प्रेम के रिश्ते को फिर से जोड़ लें, तब भी लोगों के मन में कोई कसक तो बनी ही रह जाती है। दूसरे शब्दों में, अगर एक बार किसी के मन में आपके प्रति प्यार की भावना मर गई, तो वह आपको दोबारा पहले जैसा प्यार नहीं कर सकता। कुछ न कुछ कमी तो रह ही जाती है।

2-रहिमन निज मन की बिथा ,मन हीरा खो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम के इन दोहों में हमें रहीम जी ने बहुत ही काम की सीख दी है। जिसके बारे में हम सब जानते हैं। रहीम जी इन पंक्तियों में कहते हैं कि अपने मन का दुःख हमें स्वयं तक ही रखना चाहिए। लोग ख़ुशी तो बाँट लेते हैं। परन्तु जब बात दुःख की आती है, तो वे आपका दुःख सुन तो अवश्य लेते हैं, लेकिन उसे बाँटते नहीं है। ना ही उसे कम करने का प्रयास करते हैं। बल्कि आपकी पीठ पीछे वे आपके दुःख का मज़ाक बनाकर हंसी उड़ाते हैं। इसीलिए हमें अपना दुःख कभी किसी को नहीं बताना चाहिए।

3-एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हमें यह शिक्षा देते हैं कि एक बार में एक ही काम करने चाहिए। हमें एक साथ कई सारे काम नहीं करने चाहिए। ऐसे में हमारे सारे काम अधूरे रह जाते हैं और कोई काम पूरा नहीं होता। एक काम के पूरा होने से कई सारे काम खुद ही पूरे हो जाते हैं। जिस तरह, किसी पौधे को फल-फूल देने लायक बनाने हेतु, हमें उसकी जड़ में पानी डालना पड़ता है। हम उसके तने या पत्तों पर पानी डालकर फल प्राप्त नहीं कर सकते। ठीक इसी प्रकार, हमें एक ही प्रभु की श्रृद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए। अगर हम अपनी आस्था-रूपी जल को अलग-अलग जगह व्यर्थ बहाएंगे, तो हमें कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

4-चित्रकूट में रमिरहे,रहिमन अवध- नरेस।
जा पर बिपदा पड़तहै,सो आवत यह देस

रहीम के दोहे भावार्थ : इन पंक्तियों में रहीम जी ने राम के वनवास के बारे में बताया है। जब उन्हें 14 वर्षों का वनवास मिला था, तो वे चित्रकूट जैसे घने जंगल में रहने के लिए बाध्य हुए थे। रहीम जी के अनुसार, इतने घने जंगल में वही रह सकता है, जो किसी विपदा में हो। नहीं तो, ऐसी परिस्थिति में कोई भी अपने मर्ज़ी से रहने नहीं आएगा।

5-दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं|
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं ||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हमें एक दोहे की महत्ता के बारे में बताया है। दोहे के चंद शब्दों में ही ढेर सारा ज्ञान भरा होता है, जो हमें जीवन की बहुत सारी महत्वपूर्ण सीख दे जाते हैं। जिस तरह, कोई नट कुंडली मारकर खुद को छोटा कर लेता है और उसके बाद ऊंचाई तक छलांग लगा लेता है। उसी तरह, एक दोहा भी कुछ ही शब्दों में हमें ढेर सारा ज्ञान दे जाता है।

6-धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय|
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास जी कहते हैं कि वह कीचड़ का

थोड़ा-सा पानी भी धन्य है, जो कीचड़ में होने के बावजूद भी ना जाने कितने कीड़े-मकौड़ों की प्यास बुझा देता है। वहीं दूसरी ओर, सागर का अपार जल जो किसी की भी प्यास नहीं बुझा सकता, कवि को किसी काम का नहीं लगता। यहाँ कवि ने एक ऐसे गरीब के बारे में कहा है, जिसके पास धन नहीं होने के बावजूद भी वह दूसरों की मदद करता है। साथ ही एक ऐसे अमीर के बारे में बताया है, जिसके पास ढेर सारा धन होने पर भी वह दूसरों की मदद नहीं करता।

7-नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत |
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत ||

रहीम के दोहे भावार्थ : यहाँ पर कवि ने स्वार्थी मनुष्य के बारे में बताया है और उसे पशु से भी बदतर कहा है। हिरण एक पशु होने पर भी मधुर ध्वनि से मुग्ध होकर शिकारी पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है। जैसे कोई मनुष्य कला से प्रसन्न हो जाए, तो फिर वह धन के बारे में नहीं सोचता, अपितु वह अपना सारा धन कला पर न्योछावर कर देता है। परन्तु कुछ मनुष्य पशु से भी बदतर होते हैं, वे कला का लुत्फ़ तो उठा लेते हैं, परन्तु बदले में कुछ नहीं देते।

8-बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय |
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ||

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने हमें जीवन से संबंधित कई शिक्षाएँ दी हैं और उन्ही में से एक शिक्षा यह है कि हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि कोई बात बिगड़े नहीं। जिस प्रकार, अगर एक बार दूध फट जाए, तो फिर लाख कोशिशों के बावजूद भी हम उसे मथ कर माखन नहीं बना सकते। ठीक उसी प्रकार, अगर एक बार कोई बात बिगड़ जाए, तो हम उसे पहले जैसी ठीक कभी नहीं कर सकते हैं। इसलिए बात बिगड़ने से पहले ही हमें उसे संभाल लेना चाहिए।

9-रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि|
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि|

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने हमें इस दोहे में जो ज्ञान दिया है, उसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए। ये पूरी जिंदगी हमारे काम आएगा। रहीम जी के अनुसार,

हर वस्तु या व्यक्ति का अपना महत्व होता है, फिर चाहे वह छोटा हो या बड़ा। हमें कभी भी किसी बड़े व्यक्ति या वस्तु के लिए छोटी वस्तु या व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कवि कहते हैं कि जहाँ सुई का काम होता है, वहां पर तलवार कोई काम नहीं कर पाती, अर्थात तलवार के आकार में बड़े होने पर भी वह काम की साबित नहीं होती, जबकि सुई आकार में अपेक्षाकृत बहुत छोटी होकर भी कारगर साबित होती है। इसीलिए हमें कभी धन-संपत्ति, ऊँच-नीच व आकार के आधार पर किसी चीज़ की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

10-रहिमन निज संपति बिना, कौ न बिपति सहाय|
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हमसे कह रहे हैं कि जब मुश्किल समय आता है, तो हमारी खुद की सम्पत्ति ही हमारी सहायता करती है। अर्थात हमें खुद की सहायता खुद ही करनी होती है, दूसरा कोई हमें उस विपत्ति से नहीं निकाल सकता। जिस प्रकार पानी के बिना कमल के फूल को सूर्य के जैसा तेजस्वी भी नहीं बचा पाता और वह मुरझा जाता है। उसी प्रकार बिना संपत्ति के मनुष्य का जीवन-निर्वाह हो पाना असंभव है।

11-रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून| ।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून|| ॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने अपने दोहों में जीवन के लिए जल के महत्व का वर्णन किया है। उनके अनुसार हमेशा पानी को हमेशा बचाकर रखना चाहिए। यह बहुमूल्य होता है। इसके बिना कुछ भी संभव नहीं है। बिना पानी के हमें न मोती में चमक मिलेगी और न हम जीवित रह पाएंगे। यहाँ पर मनुष्य के संदर्भ में कवि ने मान-मर्यादा को पानी की तरह बताया है। जिस तरह पानी के बिना मोती की चमक चली जाती है, ठीक उसी तरह, एक मनुष्य की मान-मर्यादा भ्रष्ट हो जाने पर उसकी प्रतिष्ठा रूपी चमक खत्म हो जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?
उत्तर:- प्रेम आपसी लगाव, निष्ठा, समपर्ण और विश्वास का नाम है। यदि एक बार भी किसी कारणवश इसमें दरार आती है तो प्रेम फिर पहले जैसा नहीं रह पाता है। जिस प्रकार धागा टूटने पर जब उसे जोड़ा जाए तो एक गाँठ पड़ ही जाती है। अत:प्रेम सम्बन्ध बड़ी ही कठिनाई से बनते हैं इसलिए इन्हें जतन से सँभालकर रखना चाहिए।

---

2. हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?
उत्तर:- हमें अपना दुःख दूसरों पर नहीं प्रकट करना चाहिए क्योंकि इससे हम केवल दूसरों के उपहास के पात्र बनते हैं।
अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार हमारे प्रति उपहासपूर्ण और दुख को और बढ़ानेवाला हो जाता है।

---

3. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?
उत्तर:- सागर पानी से लबालब भरा होने के बावजूद उसके जल को कोई पी नहीं पाता क्योंकि उसका स्वाद खारा होता है। इसके विपरीत पंक के जल को पीकर छोटे जीव-जंतु की प्यास बुझ जाती है। वे तृप्त हो जाते हैं इसलिए रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को उसकी उपयोगिता के करण धन्य कहा है।

---

4. एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?
उत्तर:- कवि रहीम के अनुसार एक ही ईश्वर पर अटूट विश्वास रखने से सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जिस प्रकार जड़ को सींचने से हमें फल और फूलों की प्राप्ति हो जाती है उसी प्रकार एक ही ईश्वर को स्मरण करने से हमें सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं।

---

5. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?
उत्तर:- यद्यपि सूर्य कमल का पोषण करता है परन्तु पानी नहीं होता तो कमल सूख जाता है क्योंकि कमल को पुष्पित होने के लिए जल की अधिक आवश्यकता होती है। अत: कमल की संपत्ति जल है उसके न रहने पर सूर्य भी उसकी सहायता नहीं कर सकता है।

---

6. अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?
उत्तर:- अवध नरेश को चित्रकूट अपने वनवास के दिनों में जाना पड़ा। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि संकट के समय सभी को ईश्वर की शरण में जाना पड़ता है।

---

7. 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?
उत्तर:- 'नट' कुंडली मारने की कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है।

***-निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट करिये -**

अ-मिलै गाँठ पारी जाय- का आशय स्पष्ट करिये |

मिलै गाँठ परि जाए का अर्थ है कि एक बार यदि सम्बन्ध बिगर जाए तो फिर कभी भी पहले जैसे मधुर नहीं बन पाते |

ब-दुःख बाँटने का क्या अर्थ है?

-दुःख बांटने का अर्थ है कि अपना दुःख एक दुसरे को बताना ,जिससे दुःख कम हो सके,सहानुभूति व्यक्त करना |

क-एकै साधे सब सधै- से कवि ने क्या प्रेरणा दी है?

-एकै साधै ,सब सधै -दोहे में कवि ने महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी |

ख-सब सधै सब जाये -का क्या आशय है?

सब साधे सब जाय का आशय है कि हमे मूल लक्ष्य को ध्यान में रख केर कम करना चाहिय|हर का के पीछे एक साथ भागने से हमारा कोइ भी कम पूरा नही होगा| हमारे सरे कम बिगर जायगे|

ग-किस तरह के लोग चित्रकूट आते है?

जो लोग बहुत दुखी होते है ,व्ही लोग चित्रकूट आते है| कवि ने स्पष्ट किया है किअवध के रजा राम वनवास के समय चित्रकूट आय थे|

घ-रहीम के अनुसार विपत्ति में कौन हमारे सहायक होते है?

-रहीम के अनुसार विपत्ति के समय केवल हमारी अपनी धन -सम्पति ही सहायक होती है|

च-रहिमन पानी राखिये -का क्या अर्थ है?

-रहिमन पानी राखिय का अर्थ है कि मनुष्य को अपना मान सम्मान बने रखना चाहिय ,क्योंकि मान सम्मान ही मनुष्य के पास सबसे बड़ी सम्पत्ति है|

छ-प्रेमरूपी धागे की क्या विशेषता है?

प्रेमरूपी धागे की विशेषता है कि यह प्रेम का बंधन जब एक बार जुड़ जाता है तो जल्दी नही टूटता ,और यदि एक बार टूट जाय तो फिर लाख कोशिश करने पैर भी पहले जैसा नही बन पाता| अर्थात बंधन विशवास पैर ही टिका होता है|

संचयन-भाग

पाठ-1

(गिल्लू)

*-शब्दार्थ:-

1-सोनजुही-जूही का पिला फूल
2-लघुप्राण-छोटा जीव
3-छुआ छूआवन-चुपके से छुना
4-समादरित-विशेष सम्मान
5-अनादरित -अपमान
6-अव्तीर्ण-प्रकट
7-काक्द्वे-दो कौए
8-निश्चेष्ट-बिना किसी हरकत के
9-आश्वासन -निश्चिन्त
10-वीस्मित-चकित
11-नीड़-घोंसला
12-पीताम्भ -पीला रंग का

प्रश्न-उत्तर:-

1: सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?
1: सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका को गिल्लू की याद आ गई। गिल्लू एक गिलहरी थी जिसकी जान लेखिका ने बचाई थी। उसके बाद से गिल्लू का पूरा जीवन लेखिका के साथ ही बीता था।
2: पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?
2: हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि पितरपक्ष के समय हमारे पूर्वज कौवे के भेष में आते हैं। एक अन्य मान्यता है कि जब कौवा काँव काँव करता है तो इसका मतलब होता है कि घर में कोई मेहमान आने वाला है। इन कारणों से कौवे को सम्मान दिया जाता है। लेकिन दूसरी ओर, कौवे के काँव काँव करने को अशुभ भी माना जाता है। इसलिए कौवे को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी कहा गया है।
3: गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?
3: गिलहरी के घायल बच्चे के घाव पर लगे खून को पहले रुई के फाहे से साफ किया गया। उसके बाद उसके घाव पर पेंसिलिन का मलहम लगाया गया। उसके बाद रुई के फाहे से उसे दूध पिलाने की कोशिश की गई जो असफल रही। लगभग ढ़ाई घंटे के उपचार के बाद गिलहरी के बच्चे के मुँह में पानी की कुछ बूँदें जा सकीं।
4: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?
4: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैरों के पास आता और फिर सर्र से परदे पर चढ़ जाता था। उसके बाद वह परदे से उतरकर लेखिका के पास आ जाता था। यह

सिलसिला तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका गिल्लू को पकड़ने के लिए दौड़ न लगा देती थीं।

5: गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

5: गिल्लू अब युवावस्था में प्रवेश कर रहा था। उसे एक जीवन साथी की जरूरत थी। इसलिए गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता समझ में आई। इसके लिए लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना अलग करके गिल्लू के लिए बाहर जाने का रास्ता बना दिया।

6: गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

6: जब लेखिका बीमार पड़ीं तो गिल्लू उनके सिर के पास बैठा रहता था। वह अपने नन्हे पंजों से लेखिका के सिर और बाल को सहलाता रहता था। इस तरह से वह किसी परिचारिका की भूमिका निभा रहा था।

7: गिल्लू कि किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?

7: गिल्लू ने दिन भर कुछ नहीं खाया था। रात में वह बहुत तकलीफ में लग रहा था। उसके बावजूद वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया। गिल्लू ने अपने ठंडे पंजों से लेखिका कि अंगुली पकड़ ली और उनके हाथ से चिपक गया। इससे लेखिका को लगने लगा कि गिल्लू का अंत समय समीप ही था।

8: 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया' – का आशय स्पष्ट कीजिए।

8: सुबह की पहली किरण निकलते ही गिल्लू के प्राण पखेरू उड़ गये। इस पंक्ति में लेखिका ने पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किया है। लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में किसी अन्य प्राणी के रूप में जन्म लेगा।

9: सोनजूही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

9: लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में सोनजूही के पीले फूल के रूप में आयेगा।